क्यूंकि ज़िद है

कैंसर से आगे की कविताएँ

'सेलेब्रेटिंग कैंसर' सीरीज के तहत
दूसरा कविता संग्रह

विभा रानी

‘समरथ’ की रचयिता की कलम से

क्यूंकि ज़िद है

‘सेलेब्रेटिंग कैंसर’ सीरीज के तहत द्वितीय कविता संग्रह

विभा रानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2023

© विभा रानी

क्यूंकि ज़िद है

(विभा रानी)

आवरण: विधा सौम्या

रेखांकन व डिजाइन: सुबोध पोद्दार

इस किताब से आनेवाली समस्त सहयोग राशि का उपयोग कैंसर मरीजों के इलाज पर खर्च किया जाएगा।

लेखक की पूर्व अनुमति के बिना इस किताब का कोई भी हिस्सा इलेक्ट्रोनिक, मेकैनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी माध्यम से पुनर्प्रस्तुत, प्रसारित या संग्रहित नहीं किया जाएगा।

समर्पण

जोर हो, जबर हो,

गाँव हो, नगर हो

ताल हो, नहर हो

डेग हो, डगर हो

आँख की पुतली में जीवन के ज़हर की बहर हो,

क्योंकि ज़िद है!

मुझ जैसे विश्व के तमाम ज़िद्दियों के नाम!

कर फतह हर किल्ला

जीत के दिल का जिल्ला

जीने की ज़िद का आख्यान

क्यूंकि ज़िद है - 2014 से लेकर 2018 तक – कैंसर पर लिखी गई छप्पन कविताओं का संग्रह है- *Celebrating Cancer* सीरीज के तहत 2016 में छपे और 'बंगलोर पोएट्री फेस्टिवल, 2016' में लोकार्पित द्विभाषी कविता संग्रह *समरथ / CAN* के बाद का दूसरा संकलन। आप सबने प्यार से तकरीबन 900 प्रतियाँ सहयोग राशि देकर लीं। राशि कैंसर मरीजों के इलाज में खर्च होती रही।

2013 में मुझे कैंसर हुआ। तब पता चला कि कैंसर को लेकर हमारा समाज कितने अधिक डर और भ्रांतियों, रूढ़ियों से घिरा हुआ है! लोग कैंसर छुपा लेते हैं, जैसे यह कोई छूत की बीमारी हो। मरीजों के साथ भेदभाव के अनगिनत किस्से तो कइयों के थक-हार जाने की कथाएं भी! चेहरों पर खौफ की छायाएं! आँखों में मृत्यु का नजारा और दिल में अवसाद की घनी रेखाएं! लाखों उदाहरण – जानेवालों के! पर, कोई यह नहीं गिनता कि इसी धरती पर करोड़ों कैंसर अचीवर्स व उनके प्रियजन पूरी ज़िंदादिली और दरियादिली के साथ जी भी रहे हैं और दूसरों के अंधेरे जीवन में प्रकाश भी लेकर आ रहे हैं।

इस बीच, फेसबुक पर मैंने 'Celebrating Cancer' नाम से पेज बनाया और अपने अनुभव, बिना बाल की तस्वीरें आदि शेयर करने लगी, ताकि लोगों के मन से कैंसर का खौफ निकल सके और कैंसर के दौर से गुजरनेवाले भी निडर

होकर सामने आ सकें। इसका बहुत सकारात्मक असर पड़ा। सरिता जैन, डॉली मेहरोत्रा, लतिका बतरा, मनोज गोयल जैसे जिंदगी के उछाह से लबालब भरे अचीवर्स ने अपनी, अपने हित-मित्रों की कहानियाँ, तस्वीरें शेयर करनी शुरू कीं। 'Celebrating Cancer' पर ही मैंने लोगों से आवाहन किया कि वे अपनी एक तस्वीर के साथ #टैग करें – #नाकहेंकैंसर को #saynotocancer. लोगों ने इसे भी बड़े उत्साह से अपने दिल से लगाया।

जीवन जीने के मेरे विश्वास पर आप सबकी सहमति की मुहर लगने लगी। कैंसर जागरूकता मेरे जीवन का एक अहम उद्देश्य बनता चला गया। कविता पाठ, *पॉपकॉर्न ब्रेस्ट्स* नाटक के मंचन, बातचीत, चर्चा, वर्कशॉप आदि के सहारे जागरूकता कार्यक्रम को आगे बढ़ा रही हूँ। आपका साथ हमारा संबल है।

क्यूंकि ज़िद है किताब जीने की इसी ज़िद की दूसरी कड़ी है। इसके पाँच खंड हैं। इसका अंग्रेजी स्वरूप अलग से आ रहा है, जिनके अंग्रेजीकरण के लिए सौरभ रॉय, अंजली ओझा, रिहा कौर, विधा सौम्या और सत्या गुम्मुलुरि जैसे पाँच अलग- अलग क्षेत्र के उत्साहियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। आभार शब्द बोलकर मैं उनकी महत्ता कम नहीं करना चाहती। मेनका शिवदासानी ने *समरथ / CAN* की तरह इस बार भी इसके अँग्रेजी रूप की एडिटिंग की ज़िम्मेदारी ली। *Dancescapes* के प्रणेता व अद्वितीय कलाकार सुबोध पोद्दार ने किताब के मूड के अनुसार पांचों खंडों के लिए अपनी कलाकृतियां देकर इस किताब को अनमोल

बना दिया है। बिटिया विधा सौम्या के आर्ट डिजाइन ने *समरथ / CAN* की तरह ही इस किताब का भी एस्थेटिक सेंस और वैल्यू बढ़ा दिया है। इस बार इसने एक खंड 'लड़की' का अनुवाद भी किया है। *'क्यूंकि ज़िद है'* केवल कविता संग्रह नहीं, जीने की ज़िद का आख्यान है। मुझे विश्वास है कि यह संग्रह भी आपके मर्म को छूने में समर्थ हो पाएगा। एक बार फिर से कहना चाहूंगी कि *समरथ / CAN* की तरह ही इस संग्रह से मिलनेवाली सहयोग राशि कैंसर के मरीजों के इलाज के लिए खर्च की जाएगी, ताकि वे भी जीवन का उत्सव मना सकें।

विभा रानी

मुंबई,

मई, 2022

अनुक्रम

क्यूंकि ज़िद है

ज़िद का आकाश 14

लड़ाई छोडब नाहीं! 16

छमाही परीक्षा – फेल या पास? 17

अनुभव की अपनी पाठशाला 18

हम हैं योद्धा, हम हैं अचीवर्स! 19

आया कीजिये कभी- कभी! 21

शाश्वत जीवन 23

सूरज की ऋचाएं 25

समरस कैंसर 26

इडली-कॉफी संग छमाही इंजेक्शन 28

कैंसर की वैतरणी 31

साधु सब जग बौराना 36

खामोशी के चीर 38

गारंटी दे दो भाई 39

स्तन, योनि और गर्भाशय 40

ए जी!

ए जी! 44

सुलगती रहें ख़्वाब में भी ख्वाहिशें कई-कई 46

बहुत दिन बाद 48
तोतापंखी चिकनाई 49
बीज सब एकांझ 52
दाने – इलायची के 54
चाय की गरम प्याली 55
किल्लत 56
क्या कुछ भी नहीं था हमारे पास? 57
मेरा शहर 59

माँ

माँ तुम काम करो 65
माँ – अबूझ पहेली 69
माँ के सपने में खेत 73
इच्छाओं के तार 76
दूध-कोख 78
हमारा संसार 80
कैंसर, सपना और माँ 82
माँ, तुम एक बहन 85
माँ का एकांत 87
माँ और मादरी ज़ुबान 88

लड़की

लड़की 92

रेयरेस्ट ऑफ रेयर 95

मंडी-रंडी, देह-दुकान 97

औरत एक मुसीबत 99

बेटियां 103

गाजर हलवा 105

हम हैं रेपिस्तान 107

मेरी लाल बड़ी बिंदी 112

भागनेवाली लड़कियां 113

होना ख़ून का पानी 115

ये बदतमीज़ औरतें! 117

घुटने भर अकलवाली 119

बच्चे

दूरियां 123

परिभाषा 124

मेरे देश के बच्चे – 1 127

मेरे देश के बच्चे – 2 131

पापा, प्लीज़ हमारे लिए 135

चंदू मैंने सपना देखा! 136

कागज, आखर, लेखनी 138

दिग्भ्रमित हैं बच्चे 141

बड़े भी बन जाएं बच्चे 143